RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-01
January -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

ग्रामीण क्षैत्र में बीपीएल वर्ग के प्रतिभाशाली बालकों की विशेषताएँ, समस्याएँ एवं उनकी शिक्षा व्यवस्था का एक अध्ययन

[1]Rakesh Kumar & [2]Dr.Aabha Singh

[1]Research Scholar, Dept. of Education, JVBI Ladnun (India)
[2]Assistant Prof., JVBI Ladnun, Rajasthan (India)

उद्देश्यः-

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य ''ग्रामीण क्षैत्र में बीपीएल वर्ग के प्रतिभाशाली बालकों की विशेषताएँ, समस्याएँ एवं उनकी शिक्षा व्यवस्था का एक अध्ययन'' करना है। वर्तमान समय में ग्रामीण क्षैत्र में बीपीएल वर्ग के प्रतिभाशाली बालकों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस शोध पत्र द्वारा प्रतिभाशाली बालकों की समस्याएँ एवं शिक्षा व्यवस्था के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए शोधार्थी द्वारा एक संक्षिप्त प्रयास किया हैं।

प्रस्तावनाः-

वर्तमान सामाजिक जटिलताओं का प्रभाव ग्रामीण क्षैत्र में बीपीएल वर्ग के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों पड़ रहा है। यही बालक जब किशोरावस्था में प्रवेश करते है, तो परिस्थितिवश उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। परिणामस्वरूप प्रतिभाशाली किशोर को अपनी सृजनात्मक शक्तियों के विकास में कई समस्याओं का सामना करता है। जब बीपीएल वर्ग के प्रतिभाशाली बालक विद्यालयी जीवन में प्रवेश करते हैं, तो उन्हें समाज, विद्यालय जीवन के विविध क्षैत्रों में असमायोजन का सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में उनका आचरण समाज सम्मत न होकर समाज के प्रतिकूल हो जाता है। एक राष्ट्र की उन्नति उसके प्रतिभाशाली विद्यार्थियों पर निर्भर है। भारत देश के भावी नागरिक योग्य, कुशल एवं आदर्श व्यक्तित्व लिए हो। प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के ये सभी व्यावहारिक पक्ष तभी विकसित हो सकते है, जबकि वह जीवन की विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में स्वयँ को समायोजित करने लायक बना सके।

वर्तमान समय में प्रतिभाशाली विद्यार्थी समाज के अन्य वर्गों से विकास में पिछड़ते जा रहे हैं। इसके परिणाम स्वरुप सामाजिक जटिलता इतनी अधिक होती जा रही है कि चारों ओर असंतोष छाया हुआ है। प्रतिभाशाली एवं सामान्य किशोर विद्यार्थियों को समाज और आर्थिक पिछड़ेपन का सामना करना पड़ता है। परिणाम स्वरुप ये लोग राष्ट्रीय धारा से पूरी तरह से मिल नहीं पाये है। और समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में असमर्थ रहे हैं। इनके कमजोर सामाजिक स्तर की संविधान निर्माताओं को पूरी जानकारी थी। और इन्हें सामाजिक न्याय दिलाने के लिये संविधान में विशेष प्रावधान किये गये है।

जैसा कि इस शोध-पत्र के शीर्षक से ही स्पष्ट हो जाता है की इस शोध के अंतर्गत ग्रामीण क्षैत्र में बीपीएल वर्ग के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की समस्याओं का अध्ययन किया जायेगा। अतः बीपीएल वर्ग के विद्यार्थियों के विकास या किसी भी राष्ट्र के विकास में उस देश के विद्यार्थी एक महत्त्वपूर्ण धूरी है। यही कारण है की उनके विकास के सभी पक्षों की आवश्यकता को भी नकारा नहीं जा सकता। इसके लिए यह आवश्यकता है कि समाज के निम्न वर्गों की भाँति ही शिक्षा प्रदान की जाए, जिस से वे अपना सर्वांगीण विकास कर अपने सृजनात्मक पक्ष को मजबूती प्रदान कर उसका स्वयँ मूल्यांकन कर सके। अब आवश्यकता है तो एक ऐसे मार्गदर्शन की जिसमें बीपीएल वर्ग के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को समझते हुए उनके साथ यथा संभव उचित व्यवहार किया जाये।

प्रतिभाशाली बालक की परिभाषाएँः-

1.कॉलसनिक :-

''प्रतिभाशाली शब्द का प्रयोग उस प्रत्येक बालक के लिए किया जा सकता है जो अपनी आयु स्तर के अन्य बालकों में कुछ योग्यताओं में श्रेष्ठ हो और समाज में महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले गुणवान व्यक्ति के रुप में उसका विशिष्ट स्थान हो।''

2.स्किनर :-

''प्रतिभावान शब्द का प्रयोग उन एक प्रतिशत बालकों के लिए किया जाता है जो सबसे अधिक बुद्धिमान होते है।''

RRIJM 2015, All Rights Reserved

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर स्पष्ट हो जाता है की प्रतिभाशाली बालक का निर्धारण केवल बुद्धिलब्धि के आधार पर ही नहीं होता है। बुद्धि के अतिरिक्त उनमें कई अन्य विशेषताओं का होना अनिवार्य है।

प्रतिभाशाली बालक की विशेषताएँः- *(Charateristics of giftes child)*

प्रतिभावान बालक की निम्नलिखित विशेषताएँ होती है :-

1.शारीरिक विशेषता :-

टर्मन के अनुसार प्रतिभावान बालक सामान्य बालकों की अपेक्षा जन्म के समय 1½ इंच लम्बा होता है उसका भार अन्य बालकों की अपेक्षा एक पोंड अधिक होता है। चलना, फिरना, बोलना इत्यादी दूसरे बच्चों से पहले सीख लेता है।

2.अध्ययन की योग्यता :-

प्रतिभावान बालकों में अधिक अध्ययन करने की योग्यता होती है। उसकी कार्यक्षमता अधिक विकसित होती है।

3.अमूर्त चिन्तन में रुचिः-

प्रतिभावान बालक अमूर्त चिन्तन में अधिक रुचि लेते है। वे कठिन समस्याओं को समझने और हल करने में अधिक कुशाग्र होते हैं।

4.प्रतिभावान बालकों की बुद्धिः-

प्रतिभावान बालकों में बुद्धिलब्धि 140+ से अधिक ही होती है। कुछ विद्वान 130+ बुद्धिलब्धि वाले बालकों को प्रतिभावान मानते हैं।

5.अवधान योग्यताः-

ऐसे बालकों में अवधान की शक्ति अधिक होती है। वे किसी वस्तु पर अधिक समय तक ध्यान एकाग्र कर सकते है। इससे उनकी चिन्तन, तर्क, मनन तथा कल्पना शक्ति का विकास होता हैं।

6.निर्देशन की कम आवश्यकताः-

प्रतिभाशाली बालकों को किसी कार्य को करने के लिए मार्ग-दर्शन या निर्देशन की आवश्यकता कम होती है। ऐसे बालकों में मौलिकता तथा बौद्धिक जिज्ञासा की प्रबलता रहती है। वह सूझबुझ और पूर्व अनुभव के सहारे किसी भी कार्य को करने की क्षमता रखता है। वह अपनी समस्याएँ भी सरलता से सुलझा लेता है।

7.सामजिक और संवेगात्मक दृढ़ताः-

प्रतिभाशाली बालकों की सामाजिकता और संवेगात्मक विकास पर अनेक मनोवैज्ञानिक परीक्षण किये गए, जिनसे यह सिद्ध होता है कि बच्चें सामजिक और संवेगात्मक दृष्टि से अधिक दृढ़ होते है। इनके अंतर्गत चार अंग है :-

(1) मित्रता (2) सामाजिक अनुशासन (3) संवेगात्मक दृढ़ता (4) खेल

8.विभिन्न रुचियाँः-

ऐसे बालक की रुचियाँ विविध होती हैं। उनकी विभिन्न क्रियाओं में रुचि होती हैं।

9.मानवीय गुणः-

अनेक परीक्षणों से यह सिद्ध हुआ है कि ऐसे बालकों में सहयोग, दयालुता, परोपकार, सहिष्णुता तथा ईमानदारी जैसे मानवीय गुण अपेक्षाकृत अधिक होते हैं।

10.व्यवसायः-

ऐसे बालक बड़े होकर अपने व्यवसायों में अपेक्षाकृत अधिक सफलता प्राप्त करते है। इनकी व्यावसायिक सफलता इनके अच्छे स्वभाव एवं सुसमायोजन के कारण होती है। इनमे भग्नाशा की मात्रा अत्यंत ही कम होती है।

11.नेतृत्व की क्षमताः-

ऐसा बालक नेतृत्व की अपूर्व क्षमता रखता है।

12.मानसिक क्रिया की तीव्रताः-

प्रतिभाशाली बालक में मानसिक क्रिया की तीव्रता होती है।

13.अंतरदृष्टिः-

ऐसा बालक आश्चर्यजनक सूझबुझ का परिचय देता है।

14.खेल एवं मित्रता के गुणः-

विटी ने एक अध्ययन में बताया की ''प्रतिभाशाली बालक खेल स्वाभाविकता, मित्रता आदि सभी गुणों में सामान्य बालकों से अच्छे होते हैं।''

15.संवेदनशीलताः-

प्रतिभाशाली बालकों की ज्ञानेन्द्रियाँ अधिक संवेदनशील होती है।

16.उदार एवं हास्य प्रकृतिः-

हैरियट का कथन है कि ''प्रखर बुद्धि बालक उदार एवं हास्य प्रकृति के होते है''।

प्रतिभाशाली बालकों की समस्याएँ :- *(Problems of Talented child)*

प्रतिभावान बालक की अधिकांश समस्याएँ समायोजन संबंधी होती है जो निम्नलिखित है :-

1.परिवार में बालक की समस्याएँ :-

माता-पिता तथा परिवार के अन्य सदस्य प्रतिभाशाली बालकों कि आवश्यकताओं को नहीं समझ

RRIJM 2015, All Rights Reserved

पाते है। और उनके साथ सामान्य बालकों के तरह ही व्यवहार करते है। प्रतिभाशाली बालक अन्य बालकों से अधिक प्रतिष्ठा मिलने की आशा करता है। परिणामतः प्रतिभाशाली बालक की अपने परिवार के सदस्यों यहाँ तक की अपने माता-पिता से भी नहीं पटती है, और परिणामस्वरूप उसका परिवार में समायोजन नहीं हो पाता है।

2.समाज में समायोजन की समस्याँ :-

प्रतिभाशाली बालक खेलकूद आदि कार्यों में अपनी आयु के वर्ग से अधिक आयु वर्ग के बालकों के साथ खेलना पसंद करता है। परन्तु बड़े बालक उसे छोटा समझ कर उसकी उपेक्षा करते है। उसे साथ खिलाना नहीं चाहते है। फलतः उसका समाज में सही तरीके से समायोजन नहीं हो पाता है।

3. विद्यालय में समायोजन समस्या :-

प्रतिभाशाली बालक उच्च बुद्धिलब्धि का होता है। अतः वह अमूर्त चिंतन में अधिक रुचि रखता है। कक्षा में शिक्षण औसत स्तर को ध्यान में रखकर किया जाता है। जिसमें प्रतिभाशाली बालक को कोई रुचि नहीं होती है। क्योंकि जो भी कक्षा में पढ़ाया जाता है वह उसके मानसिक स्तर से अति निम्न कोटि के स्तर का होता है। फलतः वह कक्षा में शिक्षक के लिए समस्या बन जाता है। और वह कक्षा से पलायन कर देता है।

4. धीमी प्रगति :-

प्रतिभाशाली बालक अपनी बुद्धि क्षमता के कारण प्रत्येक नवीन ज्ञान को तत्काल सीखने की क्षमता रखता है। इस कारण कक्षा में वह सामान्य बालकों के साथ समायोजित नहीं हो पाता है। कक्षा शिक्षण प्रतिभाशाली बालक की योग्यता के अनुपात में नहीं हो पता है। फलतः उसका कक्षा में ठीक प्रकार से समायोजन नहीं हो पाता है। और उसकी सीखने की गति धीमी हो जाती है।

प्रतिभाशाली बालकों की शिक्षा व्यवस्था :- *(Educational Programme for gifted Children)*

प्रतिभाशाली बालकों को सामान्य बालकों की भांति शिक्षा नहीं दी जानी चाहिए। ऐसा करने में उनके व्यक्तित्व का समुचित विकास न हो सकेगा। प्रतिभाशाली बालकों की शिक्षा व्यवस्था के लिए निम्नलिखित प्रयत्न किये जा सकते है जो इस प्रकार है :-

1.सामान्य रूप से कक्षोन्नति :-

प्रतिभाशाली बालक विषय को अधिक शीघ्र समझ लेते है अतः कुछ मनोवैज्ञानिकों के अनुसार उनकी कक्षा में वर्ष में दो बार उन्नति की जानी चाहिए।

2.व्यक्तिगत शिक्षण :-

कुछ शिक्षा शास्त्रियों का मत है कि ऐसे बालकों को व्यक्तिगत रुप से शिक्षण दिया जाए परन्तु यह विधि व्यावहारिक नहीं है।

3.योजना विधि :-

ऐसे बालकों को योजना विधि से अध्ययन कराया जाना चाहिए।

4.विशेष विद्यालय और कक्षाएँ :-

प्रतिभाशाली बालकों के लिए विशेष विद्यालय एवं कक्षाओं की व्यवस्था की जानी चाहिए।

5.विस्तृत पाठ्यक्रम :-

प्रतिभाशाली बालकों के लिए विशेष और विस्तृत पाठ्यक्रम तैयार किया जाना चाहिए। इस प्रकार के पाठ्यक्रम में अधिक और कठिन विषय रखे जाने चाहिए। जिससे से उनकी मौलिक योग्यता, तर्क, चिंतन, सामान्य मानसिक योग्यता, रचनात्मक शक्ति तथा प्रयोगात्मक कार्यों के लिए क्षमता का विकास किया जा सके।

6.सामूहिक कार्यो को प्रोत्साहन :-

प्रतिभाशाली बालकों को सामूहिक कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इससे उनकी क्षमता में वृद्धि होती है।

7.पुस्तकालय एवं वाचनालय सुविधा :-

ऐसे बालकों के लिए अच्छे पुस्तकालय एवं वाचनालयों की व्यवस्था की जाए। इस प्रकार उन्हें विभिन प्रकार का ज्ञान अर्जित करने का अवसर मिलेगा।

8.विशिष्ट अध्यापन विधियाँ :-

प्रतिभाशाली बालकों को पढ़ने के लिए विशिष्ट अध्यापन की विधियों की आवश्यकता पड़ती है। उन्हें गहन तथा विस्तृत रुप से पढ़ाया जाना चाहिए।

9.भाषण एवं शैक्षिक पर्यटन :-

ऐसे बालकों के लिए भाषण तथा शैक्षणिक पर्यटन का आयोजन करना चाहिए।

10.स्वतंत्र कार्य :-

प्रतिभाशाली बालकों को स्वतंत्र रूप से कार्य करने का अवसर मिलना चाहिए। इससे उनमें आत्मविश्वास उत्पन्न होगा। बालक को विकास के लिए समान अवसर दिया जाए।

11.संस्कृति की शिक्षा :-

ऐसे बालकों को अपनी संस्कृति के विकास की शिक्षा दी जानी चाहिए। इससे वे समाज में उचित विकास कर सकेंगे।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

12.मार्ग प्रदर्शन :-

इनके लिए विशेष तौर से शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं का आयोजन किया जाए।

13.पाठ्य सहगामी क्रियाएँ :-

ऐसे बालकों के लिए पाठ्यसहगामी क्रियाओं का आयोजन किया जाना चाहिए। बालकों में विभिन्न प्रकार की रुचियाँ होती है।

14.योग्य, अनुभवी एवं प्रशिक्षित अध्यापकों से सम्पर्क :-

प्रतिभाशाली बालकों का सम्पर्क योग्य, अनुभवी एवं प्रशिक्षित अध्यापकों से कराया जाना चाहिए। ताकि वे बालकों की योग्यता, क्षमता और आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा दे सकेगें।

15.विशेष अवकाश कालीन कक्षाएँ :-

प्रतिभाशाली बालकों के लिए विशेष अवकाशकालीन (विशेषतः ग्रीष्मावकाश) कक्षा की व्यवस्था की जाये।

16.नेतृत्व गुणों का विकास :-

प्रतिभाशाली बालकों में सामाजिकता तथा नेतृत्व गुणों का विकास किया जाए।

17. छात्रवृति की सुविधा :-

ऐसे बालकों को छात्रवृति की सुविधा प्रदान की जाए।

18.खेलों तथा अध्ययन के उपकरण :-

प्रतिभाशाली बालकों के समुचित विकास के लिए खेलों तथा अध्ययन के उपकरणों की अधिक सुविधा दी जाए।

सारांश :-

ग्रामीण क्षेत्र में बीपीएल वर्ग के प्रतिभाशाली बालकों के लिये अनेक विकासात्मक कार्य हो रहे है। इनमें से विकास का लाभ सभी को नहीं मिल पाता है। इनमें से कुछ विकास की उपलब्धियों को स्पर्श कर चूके है, और एक निश्चित आर्थिक स्तर पर आ गये है। आज जब देश एक प्रजातांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष और समाजवादी राष्ट्र के निर्माण में लगा है तो ग्रामीण क्षेत्र में बीपीएल वर्ग के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की समस्याएँ राष्ट्र की समस्याओं से पृथक नहीं है।

देश के सभी नागरिकों का भविष्य एक ही है। साथ डूबेगें, साथ तैरेगें। अतः समाज के ग्रामीण क्षेत्र में बीपीएल वर्ग के प्रतिभाशाली वर्ग के विद्यार्थियों की प्रतिष्ठा अन्य नागरिक की तुलना में कम नहीं है। प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को विकास की मुख्य धारा से जोड़ने के लिये सरकार अनेक प्रयास कर रही हैं। शोधकर्ता ने ग्रामीण क्षेत्र में बीपीएल वर्ग के प्रतिभाशाली बालकों को विकास एवं मुख्यधारा से जोड़ने के लिये संक्षिप्त रुप से यह शोध-पत्र तैयार किया गया है। ग्रामीण क्षेत्र में बीपीएल वर्ग के प्रतिभाशाली बालकों को हर परिस्थिति में उचित वातावरण मिलना आवश्यक है।

संन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. उपाध्याय, पशुपतिनाथ (2011 विद्या-मेघ),''शिक्षण के मूल सिद्धान्त और शिक्षक का दायित्व''।
2.भटनागर आर.पी. :''शिक्षा अनुसंधान'' लॉयल बुक डीपो,मेरठ,2005 पृष्ठ संख्याः 46
3.भटनागर, सुरेश,''आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ ''आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।
शर्मा एवं शर्मा ''आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान के आधार'' पृष्ठ संख्या-125 (जनवरी.2007)
4.श्रीवास्तव डी.एन.,''अनुसन्धान विधियाँ'' साहित्य प्रकाशन, आगराः पृष्ट संख्या :-८३
5.सक्सेना एन.आर,(2010)''शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज-शास्त्रीय आधार''आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।

■ **पत्र-पत्रिकाएं लेख:-**

1. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका अंक 23 (जनवरी-जून-2007)
2.शर्मा,अनिल कुमार, (2011) विद्यामेघ), लेखः-''पूर्ण साक्षरता की दिशा में एक कदम सर्व शिक्षा अभियान'' (पेज न. 23)
3.''शिविरा पत्रिका'',राजस्थान राज्य शिक्षा विभाग,बीकानेर,मई-जून 2008,पृष्ठ सं.11
4. शैक्षिक रिपोर्ट की वार्षिक स्थिति, ''असर दैनिक भास्कर'',(2009)
5.सहगल,एन (2005), ''समावेशी-शिक्षा के लिए क्षेत्र मानचित्रण भारतीय साहित्य की समीक्षा''।

■ **Websites & Report :-**

1.https://bpl.wikipedia.org
2.Tendulkar Panal , BPL Report, Reserve Bank of India, April, 2014

RRIJM 2015, All Rights Reserved